नवपद आराधना अनुष्ठान प्रारंभ

शक्ति अर्जित करें, पर दुरुपयोग न करें : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 8 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि नवरात्र साधना का समय है। इस समय में अपनी शक्ति को बढ़ाया जाता है शक्ति का विकास होना चाहिए पर उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जो साधना के द्वारा दूसरों का विनास करने का लक्ष्य रखता है वह निर्किष्ट कोटी की साधना हो जाती है। दूसरों को विघ्न बाधाओं को दूर करने के लिए की जाने वाली साधना मध्यम कोटी की है और जिस साधना के पीछे निर्जरा की भावना आत्मकल्याण का लक्ष्य ओर मोह प्राप्ति की इच्छा होती है वह प्रसस्त कोटी की साधना है।

उक्त विचार उन्होंने स्थानीय तेरापंथ भवन में नवपद आराधन अनुष्ठान के शुभारज़्भ अवसर पर व्यक्त किये। इस मौके पर उन्होंने जप के प्रयोग कराकर अनुष्ठान का आगाज किया। आचार्य महाश्रमण ने एक दूसरे पर झूठे आरोप लगाने वाले राजनीतिज्ञों, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों एवं श्रावक समाज को परोक्ष रूप से नसीहत देते हुए कहा कि निर्दोष पर झूठा दोष आरोपित करने वाले की आगामी गति बिगड़ जाती है। झूठा आरोप लगाना एक पाप है। मनुष्य को ऐसे पाप से बचना चाहिए। जो ऐसे आरोप लगाते हैं उनको चिंतन करना चाहिए कि इसका कटु फल प्राप्त होगा। इस अवसर पर सुजानमल दुगड़ ने कविता के द्वारा अपने विचार रखे। दोपहर में मुनि किशनलाल ने नवरात्र के प्रथम दिन नवपद के प्रथम पद 'णमो अरहंताण' का अनुष्ठान करवाया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)